Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

पटकथा लेखन फीचर फिल्म

डॉ. बिन्दू परस्ते*

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस श्री अटल बिहारी वाजपेयी, शास. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – बडे पर्दे की फिल्म अथवा छोटे पर्दे दूरदर्शन के लिए किसी भी फिल्म, टेलीफिल्म आदि के लिए एक कहानी की आवश्यकता होती है। साहित्य में कहानी सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है, परन्तु दृष्य माध्यमों के लिए लिखी गई कहानी का स्वरूप प्रिन्ट माध्यम की अपेक्षा विकल्प ही अलग किस्म का होता है। यही कारण है कि प्रिन्ट माध्यमों के अनेकों महान साहित्यकार दृष्य माध्यमों में पूरी तरह असफल हो गये। ऐसे लोगों में मुंशी प्रेमचंद, भगवती चरण वर्मा, सुदर्शन, जैनेन्द्र कुमार तथा कमलेश्वर जैसे महान साहित्यकारों का नाम ससम्मान लिया जा सकता है। कमलेश्वर जी के उपन्यास फिर भी पर फिल्म निर्माण हेतु एक अभिनत प्रयोग किया गया था। इसमें मूल कहानी में बिना किसी परिवर्तन के फिल्म बनाई गई थी, वह फिल्म बुरी तरह बाक्स ऑफिस पर पिट गई थी। यही हाल जैनेन्द्र कुमार की कहानी 'त्यागपत्र' का भी हुआ, जिसमें उन्होंने अपने सामने ही पटकथा लिखवाई थी ताकि उसमें कोई परिवर्तन नही किया जा सके। इस तरह के अनेको उदाहरण है।

पटकथा लेखन कार्य आम लेखन से विलकुल दूसरी तरह का लेखन कार्य है। जिसे दृष्यों के आधार पर लिखा जाता है। वह व्यक्ति उतना ही अधिक सफल पटकथा लेखक होता है जिसे लेखन के साथ–साथ निर्देशन सम्पादन और छायांकन का भी अनुभव है। इसलिए यह आवश्यक है कि सफल पटकथा लेखन बनने हेतु निर्देशन सम्पादन और छायांकन का कुछ न कुछ अनुभव होना ही चाहिए। अनुभवहीनता के कारण किसी कम सम्पन्न निर्माता के लिए एक आम लेखन निम्न प्रकार के दृष्यों को लिखेगा, 'पहाड़ की चोटियों से घुमड़–घुमड़ कर बादल पूर्व दिशा से पश्चिम दिशा की ओर भाग रहे है तभी तेजी से हिमपात होने लगा, जिससे सारा इलाका गांव, घर, छत, आंगन, पेड सभी कुछ बर्फ से ढक गये । अथवा हीरो हवाई जहाज से सफर कर रहा था, वह दिल्ली के उपर से उड़ रहा है उसने दूरवीन से कुतुबमीनार कनॉट प्लेस, संसद भवन को देखा, अब जहाज लखपउ के उपर उड़ रहा है, आदि – आदि।

जहाँ तक उपरोक्त दृष्यों का प्रश्न है ये दृष्य गलत भी नही है और न ही इन्हें फिल्माना कठिन है परन्तु ये दृष्य अत्यंत खर्चीले है किसी टेलीफिल्म या सीरियल के आधे घंटे के कार्यक्रम में इस तरह की चार–पांच सीनें डाल दी जायें तो निर्माता का दिवाला निकल जायेगा। कम बजट की बड़े पर्दे की फिल्मों में भी इस तरह के दृष्य बजट को अनावश्यक रूप से बढ़ा सकते है। जब तक ऐसे दृष्यों की कहानी में जबरदस्त मांग न हो तब तक लेखक को ऐसे खर्चीले दृष्यों से बचना चाहिए। साहित्यिक दृष्टि से श्रेष्ठ कहानी फिल्म निर्माताओं की दृष्टि में बिलकुल बेकार हो सकती है। इसलिए फिल्म अथवा सीरियल के लिए कहानी का चयन करना टेढी खीर है क्योंकि दृष्य माध्यमों में कहानी का चयन उसकी व्यावसायिकता के आधार पर तय किया जाता है। यदि किसी साहित्यिक कहानी को पटकथा लेखन के लिए चयनित कर लिया जाय तो उसमें व्यावसायिकता एवं दृष्य माध्यम को दृष्टिगत रखते हुए उसमें भावात्मक परिवर्तन किया जाने आवश्यक होते है तभी वह कहानी सफल हो पाती है। दूरदर्शन पर पिछली सहस्त्र शताब्दी के अंतिम चरण में साल भर से अधिक समय तक नं. एक के स्थान पर रहने वाला सीरियल चन्द्रकान्ता इसका प्रमुख उदाहरण है जो कि ऐसे महान उपन्यासकार देवकी नन्दन खत्री की अद्धितीय कृति पर आधारित है जिसे पढ़ने के लिए लोगों में हिन्दी सीखने की होड़ लग गई थी और उस कहानी को दूरदर्शन के लिए परिमार्जित और परिवर्तित कर रहे थे, एक चोटी के साहित्यकार कमलेश्वर । कमलेश्वर जैसा बड़ा नाम उच्चकोटी का साहित्यकार साहित्य की अनदेखी करेगा यह विश्वास से परे है परन्तु कमलेश्वर केवल साहित्यकार ही नहीं बल्कि एक उच्चकोटि के निर्माता निर्देशन न समीक्षक भी है, इसलिए दूरदर्शन पर प्रकाशित चन्द्रकांता में उन्हें मूल देवकीनंदन कृत चन्द्रकांता में आवश्यक परिवर्तन करना पडे थे पर आत्मा से छेड़छाड़ नही की यह पूर्व: स्पष्ट हो चुका है कि पटकथा लेखन आम लेखन से पूरी तरह विभिन्नता लिए है। इसीलिए यह आवश्यक नहीं है कि पटकथा लेखन अच्छा साहित्यकार हो, अथवा एक अच्छा साहित्यकार बेहतरीन पटकथा लेखक हो, लेकिन इस बात से इन्कार नही किया जा सकता है कि कई अच्छे पटकथा लेखन उच्चकोटि के साहित्यकार भी रहे है। इस संदर्भ में डॉ. अनुजा भट् साहित्य और सिनेमा के अन्तर्सम्बन्धों को स्पस्ट करते हुए कहती है कि यदि साहित्य की आत्मा जीवित रखी जाय तो फिल्म हिट हो सकती है। वर्षेते दृष्य माध्यम में आवश्यक परिवर्तन कहानी की आत्मा को छेडे बिना किये जायें। फिल्म और साहित्य के परस्पर लगाव का प्रश्न सदैव से ही जीवत रहा है।

कहा जाता है कि एक उपन्यासकार तब तक उपन्यास की रचना नही कर सकता है जब तक वह निरन्तर विभिन्न कथाओं का निर्धारण नही कर लेता जिसे एक कथावाचन के रूप में उसकी परिदृष्टि घेरे रहती है। हम जिन्हें सिनेमा की शब्दावली में कह सकते है– कैमरा ऐंगल, क्लोजअप, मीडियम शाट। सिनेमा में जो क्लेश बैन दिखाया जाता हे वह मूलत: उपन्यास की ही देन है।

भारतीय सिनेमा को समृद्ध करने और चर्चित करने में साहित्यिक कृतियों के योगदान की नहीं भूलाया जा सकता। इसका सबसे बड़ा उदहरण विभूतिनारायण बंधोपाध्याय के उपन्यास 'पाथेर पांचाली' हो सन 1955 में सत्यजीत रे ने इस कर फिल्म बनाई और यह फिल्म सर्वश्रेष्ठ रही। राष्ट्रीय ही नहीं बरन अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसने ख्याति अर्जित की। रे ने पहनी बार प्रतीकों, बिम्बों, सूक्षम संकेतों और ऐसे दृष्यों–बन्धों का उपयोग किया, जो उस समय तक चित्रकला, कविता और संगीत की सम्पत्ति समझे जाते थे। इसी आधार पर प्रेमचन्द्र के उपन्यास सद्गति फिल्म का निर्माण भी सत्यजीत रे ने ही किया। साहित्यिक रचनाओं फिल्म स्त्रोत के रूप में इस्तेमाल करने वाले निर्देशकों में विमल राय का नाम महत्वपूर्ण है 'दो बीघा जमीन' उनकी एक चर्चित फिल्म रही, जिसका कथानक उन्होने रवीन्द्रनाथ टैगोर की एक कविता से लिया। शरतचन्द्र के उपन्यासों पर उन्होने अनेक फिल्में बनाई जैसे परिणीता, विराजवहू तथा देवदास आदि। देवदास उस समय की लोकप्रिय फिल्म थी। उनकी चर्चित फिल्मों में सुबोध घोष के सुजाता उपन्यास पर केंद्रित वंदिनी तथा चन्द्रधर शर्मा गुतेरी की कहानी उसने कहा का विशेष उल्लेखनीय रही। साहित्यिक कृतियों की विषय वस्तु को सिनेमा की भाषा में ढालते समय कुछ परिवर्तन आवश्यक हुए, किन्तु उनकी साहित्यिक संवेदना में उन्होने स्पष्ट नही होने दिया। पस्तुतिकरण की दृष्टि से भी विमल राय का चित्रांकन विषय वस्तु के वातावरण में अनुकूल रहा। प्रेमाभिव्यक्ति के दृष्यों में प्रतीकों का प्रयोग किया जो बहुत सफल रहै।

इसी दौर में वासु भट्टाचार्य ने हिन्दी के विख्यात कहानीकार फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी पर आधारित तीसरी कसम, का निर्माण किया इसी प्रकार वासु चटर्जी ने राजेन्द्र यादव ने उपन्यास 'सारा आकाश' की कथा भूमि में इसी नाम से सफल फिल्म बनाई। राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित मृणाल सेन द्वारा निर्देशित 'भुवनसोम' का फिल्म इतिहास में उल्लेखित योगदान है। यह फिल्म प्रसिद्ध कथाकार वनफुल की कृति पर आधारित थी। विषय वस्तु की ताजगी के साथ भुवनसोम न पहली बार हिन्दी के लोकप्रिय व्यवसायिक फिल्म निर्माण से हटकर एक भिन्न शैली की फिल्म सेस्कति का मार्ग प्रशस्त्र किया। जिसे दर्शकों ने सराहा और उनेक ऐसे तत्व इसमें उभर कर आये जो अंतत: नये सिनेमा के महत्वपूर्ण अंग बने। मृणाल सेन ने यह स्थापित कर दिया कि किसी साहित्यिक कृति के रूपान्तरण साहित्य के समान गंभीर और प्रभावशाली होना चाहिए। महत्वपूर्ण बात यह है कि यदि किसी किताब पर फिल्म बनती है तो उसे किताब से पहले फिल्म होना चाहिए जिसे फिल्मकार अपने साधनों से क्रियेट करे और पुस्तक को नष्ट हो जाने का खतरा न रहे।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. पटकथा लेखन – उमेश राठौर।
2. आधुनिक जनसंचार और हिन्दी – डॉ. हरिमोहन।

****